3. भूख हड़ताल

- श्री बालशौरि रेड्डी

श्री बालशौरि रेड्डी जी का जन्म 1 चुलाई 1928 को आंध्रप्रदेश के कड़पा ज़िले के गोल्लल गूडूर नामक गाँव में हुआ। नेल्लूर, कड़पा, इलाहाबाद और वाराणसी से इन्होंने शिक्षा प्रापति की। दक्षिण के श्रेष्ठ अहिन्दी भाषी हिन्दी साहित्यकारों में बालशौरि रेड्डी जी एक हैं। दक्षिण में राष्ट्रभाषा हिन्दी को समृद्ध एवं लोकप्रिय बनाने में श्री रेड्डी जी का योगदान अविस्मरणीय है। उनकी मातृभाषा तेलुगु है, फिर भी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति उनके हृदय में श्रद्धा और प्रेम की भावना कूट - कूट कर भरी हुई है। अतः हिन्दी को ही उन्होंने अपनी लेखनी का माध्यम बनाया है। आंध्र वासी होने के कारण भी रेड्डी जी आंध्र के समाज से बहुत ही प्रभावित हुए है। अतः उनकी रचनाओं मं दक्षिण के सामाजिक, पारिवारकि, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन का स्वाभाविक चित्रण परिलक्षित होता है। अपनी हिन्दी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने दक्षिण के जन-जीवन एवं संस्कृति से हिन्दी पाठकों का परिचय कराया है। उनका यह कार्य राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

'शबरी, जिन्दगी की राह', 'यह बस्ती, ये लोग', 'भग्न सीमाएँ', 'बैरिस्टर', 'स्वप्न और सत्य', 'प्रकाश और परछाई', 'लकुमा', 'धरती मेरी माँ', 'प्रोफेसर', 'वीर केसरी', 'दावानल' आदि इनके प्रमुख उपन्यास है। इनकी कई सैकड़ों कहानियाँ प्रकाशित हुई। इन्होंने तेलुगु में भी कुछ उपन्यास और कई कहानियाँ प्रकाशित की। 'पंचामृत', 'आंध्र भारती' 'तेलुगु साहित्य का इतिहास', 'तेलुगु वाङ्मय विविध विधाएँ' जैसी संस्कृति एवं साहित्य से संबंधित पुस्तकों का भी सृजन किया। श्री रेड्डी जी ने कई उपन्यास एवं

नाटकों का हिन्दी से तेलुगु में और तेलुगु से हिन्दी में अनुवाद संपन्न कि है। श्री रेड्डी जी ने कई सालों तक हिन्दी 'चंदामामा' का सफल संपादन किया।

आज सवेरे पाँच बजे उठा। नहा - धोकर चाय पी ली। बस पकड़ने के ख्याल से बस स्टैण्ड पहुँचा। बस स्टैण्ड को सुनसान देख मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही। बस-स्टेशन पर एक भी बस न थी। हमेशा मुसाफिरों से खचाखच भरा रहने वाला बस-स्टेशन आज एकदम खाली था। मुझे लगा कि मैं कहीं गलत जगह पहुँच गया हूँ। मेरी आँखों पर मुझे विश्वस न हुआ। मुझे बस - स्टेशन तक पहुँचाने के लिए साले साहब ने अपनी जीप भेजी थी। मेरे साथ ड्राइवर राजगोपाल और साले साहब का नौकर चिन्नस्वामी भी था।

मुझे आश्चर्य चकित देख बोले "साहब, हम लोग कल रात को आपको बताना भूल गये। आज तो परिवहन विभाग वाले हड़ताल पर है। सरकारी और गैर - सरकारी बसें भी नहीं चलेंगी। क्या करें ?

"अरे भाई, कुछ तो उपाय सोचो ! मुजे किसी भी हालत में दुपहर तक मद्रास पहुँचना है। शाम के तीन बजे मुझे एक मीटिंग में भाषण देना है। मिनिस्टर साहब उसकी अध्यक्षता करने वाले है।"

"कैसी मीटिंग है, सॉब ?" राजगोपाल ने पूछा।

"प्रौढ़ शिक्षा की समस्याएँ और उनके निदान पर। अब मेरी समस्या को सुलझाओ तो सही!"

"सॉब ! आप कृपया यहाँ पर बैठे रहिए। हम लोग इस बीच पता लगाकर लौट आते है - कहीं लॉरी, ट्रक या सरकारी गाड़ी जाती हो।"

"क्या इस वक्त रेल गाड़ी नहीं?"

"सॉब ! आपको चित्तूर से पाकाला होते हुए रेणिगुण्टा पहुँचना है, वहाँ

से आपको जनता एकसप्रेस मिल सकती है, लेकिन रेणिगुण्टा तक पहुँचने के लिए इस वक्त कोई गाड़ी नहीं है।

"तब तो एक काम करो। वेलूर तक जाने के लिए कोई साधन होतो जल्दी पता लगाओ। मुझे उस गाड़ी पर चढ़ा दो, बस, मैं वक्त पर मद्रास पहुँच जाऊँगा।"

"बात सही है, मगर बस-सर्विस तो इस वक्त उपलब्ध नहीं है। आपको ट्रक या लॉरी का ही सहारा लेना पड़ेना।"

कोई बात नहीं, कुछ तो इंतजाम हो। अब चर्चा करने से फायदा क्या है। जाओ, जल्दी करो। हाँ, सुनों तुम लोग मुझे वेलूर तक इसी जीप में पहुँचा दो, आखिर चौबीस किलो मीटर का रास्ता है। आध घंटे में पहुँच सकते हैं। वेलूर से तमिलनाडु सरकार की बसें तो उपलब्ध हैं। वहाँ पर तो कोई हड़ताल नहीं है।"

"आपका कहना सही है, मगर बात यह है......" राजगोपाल कुछ कहने जा रहा था।

मुझे गुस्सा आ गया, मैने खीझकर कहा - "तुम हर बात में कोई न कोई अड़ंगा लगाते हो। हाँ, बोलो, इसमें कैसी कठिनाई है ?"

"सॉब! आप नाराज मत होइएगा। बात यह है कि आंध्र प्रदेश सरकार की गाड़ी तमिलनाडु की सीमा को पार कर नहीं जा सकती।"

"हाँ, हाँ, मैं समझ गया। अरे भाई, यहाँ से तो रोज सैकड़ों ट्रक मद्रास जाते है। परियहन अधिकारी मेरे दोस्त है। तुम उनके घर जाकर मेरी हालत बता दो और कुछ इंतजाम करके आ जाओ। तब तक मैं यहीं बैठा रहूँगा।"

राजगोपाल और चिन्नस्वामी जीप स्टॉर्ट करके चले गए। मैं सिमेंट बेंच पर लुढ़क पड़ा। दिल में बेचैना थी। मुझसे बैठा नहीं रहा गया। उठ खड़ा हुआ। चहलकदम करने लगा। एक कोने में टीन का शेड बना था। चाय की

छोटी-सी दुकान लगी थी। जब कुछ सूझ नहीं रहा था, तो मन को दूसरी दिशा में मोड़ने के ख्याल से चाय की दुकान तक पहुँचा। चाय पी ली, सिगरेट सुलगाया और जोर की एक कश ली।

मुझे लगा कि अब मेरा दिमाग का टेन्शन कम हो गया। यह समस्या मेरी ही नहीं, बल्कि पूरे समाज की है। मुझ जैसे कई ज़रूरतमन्द लोग आज अपनी मंजिल तक पहुँचने से रह गए होंगे। कोई शादी में वक्त पर पहुँच पाया न होगा। किसी को आज नौकरी में प्रवेश करना होगा, किसी का साक्षात्कार होगा। कोई अपने बंधु व रिश्तेदार को अस्पताल में दाखिल कराने से रह गया होगा। तब मुझे तसल्ली मिली। मैंने सोचा कि प्रौढ़ शिक्षा को लेकर भाषण बाज़ी करने पर ही आम आदमी का सवाल हल होनेवाला नहीं है। आज दिन इस समाज में कोई न कोई आन्दोलन होता रहता है। हर घड़ी कोई न कोई हलचल होती रहती है।

तभी एक अधेड़ उम्र का आदमी मेरी तरफ आस भरी नज़र गड़ाये आ पहुँचा, धीरस स्वर में बोला ''बाबूजी, आप जलावन खरीदना चाहेंगे?..

''नहीं भाई, हम तो मुसाफ़िर है।''

''बाबू जी, आज कोई ग्राहक नहीं आये, सस्ते में बेचूँगा, लेते जाइए।'' बूढ़े लकड़हारे ने गिड़गिड़ाकर कहा।

''भाई, हम तो इस शहर के नहीं है, हमें दूर की यात्रा करनी है, फिर घर बस के अड्डे से मेरे घर तक पहुँचने के लिए लकड़ी के वास्ते इतनी मजूरी देनी पड़ेगी, जो इस लकड़ी के दाम से ज्यादा बैठेगी। समझो!''

लकड़हारा निराश हो भारी कदमों को घसीटते लकड़ी के गट्ठर के पास लौटने को हुआ। उसकी आँखों से दीनता टपक रही थी। वैसे उसका बदन गठीला था, उसकी रूप-रेखाएँ भी नाक-नक्श ऐसी थी कि उसे साफ़ कपड़े पहना दिए जाए तो उसे सब लोग संभ्रान्त परिवार का व्यक्ति ही समझ बैठेंगे।

उसकी दृष्टि में जो प्रखरता थी, उसने मुझे बरबस उसकी ओर आकृष्ट किया। मैंने सोचा कि लकड़ी के गट्‌ठर का बोझ उतारने से मेरा कोई फायदा होने वाला नहीं है, उल्टे नुकसान ही होगा, उस नुकसान का अर्धांश उसे देकर दोनों तरफ़ से थोड़ा-बहुत संतुष्ट हो लें। मैंने उस आदमी को पुकारा, जब समप गया, मैंने पूछा, ''भाई, तुम्हारा नाम क्या है?

''असली नाम नारायणराव है पर मैं नारायण नाम से लोगों के बीच जाना - पहचाना जाता हूँ।

''सुनो, तुम ये दो रुपये ले लो, लकड़ी भी साथ में ले जाओ।''

मेरे मुँह से ये शब्द निकलने की देरी थी कि नारायण का चेहरा रंग बदलने लगा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे इस प्रस्ताव या तो वह असंतुष्ट है या रुष्ट। इस बीच वह तपाक से बोल उठा - ''बाबूजी, मुझ पर आपको मेहरबानी दिखाने की कोई ज़रूरत नहीं और न मैंने आपसे दान ही माँगा है। लकड़ी खरीदना चाहें तो खरीद लीजिए, वरना चलते बनिए। हम कोई भिखमंगे नहीं है।''

लकड़हारे का रोष देख मैं चौक पड़ा। उसके स्वाभिमान और आत्मविश्वास की भावना को मन ही मन दाद देते हुए बोला - भाई, बुरा मत मानो। मैंने सोचा कि आज तुम्हारी लकड़ी बिकी नहीं, बाल - बच्चे वाले होगे, खाली हाथ लौटोगे तो बच्चों को कुछ खिलाने-पिलाने में शायद तकलीफ़ हो।''

''बाबूजी, यह समस्या एक दिन की नहीं। ज़िन्दगी भर की है। आज आप मुझ पर रहम खाकर कुछ रुपये दें तो आज की समस्या हल हो जाए, किन्तु ज़िन्दगी भर कौन देगा? हम जैसे लोगों को इस, समाज में खाने की गैरंटी कहाँ है। कभी तूफान होता है, कभी बरसात हो जाती है तो हम चाह कर भी जंगल में जाकर लकड़ी काट कर नहीं ला सकते। लाने पर भी

उसकी बिक्री न हो, तो उस दिन हमें फाका करना पड़ता है। कभी बुखार आया, या मुझे या बाल-बच्चों व पत्नी को कुछ हुआ तो मैं काम पर नहीं जा सकता, उस दिन हमें खाना कौन देगा ? जब तक इन हाथ-पैरों में ताक़त है, तब तक मैं अपनी गृहस्थी की गाड़ी कोल्हू के बैल की तरह खींच सकता हूँ, उसके बाद मेरा परिवार कुत्ते की मौत मरेगा।'' ये शब्द कहते वह उत्तेजित हो उठा।

''यह समस्या केवल तुम्हारी ही नहीं भाई हम सबकी है। जो नौकरी करता है और उसकी अपनी कोई जमीन-जायदाद या संपत्ति नहीं होती वह यदि अचानक मर जाता है या उसकी नौकरी छूट जाती है तो ? उसके परिवार की भी यही हालत होती है। इसीलिए हमने आजादी की लड़ाई लड़ी ताकि इस देश में पैदा हुआ व्यक्ति कोई भूखा, नंगा और बीमार न रहे, थोड़ा - बहुत पढ़ - लिख कर अपने को समझे।''

''आप की बात सही है ? आजादी तो मिल गई फिर भी इस देश में लाखों और करोड़ों लोग भूखे, नंगे और बीमार है। काला अक्षार भैंस बराबर है। मैं तो यही रोना रोता हूँ। आजादी चन्द लोगों की नहीं, सबके लिए उसका फल मिले।''

''बाबूजी जानते हैं, कल रात को क्या हुआ। मैं समीप के जंगल में लकड़ी काटने गया, जंगल के गार्ड ने देख लिया। उसने मुझे माँ-बहन की गालियाँ सुनाई। मुजे इतना क्रोध आया कि उसका गला घोंट दूँ, आगे बढ़ा लेकिन मुझे बीवी और बच्चों की याद आयी। अगर मैं उसको मार कर जेल जाऊँ या फाँसी पर लटकता हूँ, तो उनका क्या होगा। वे अनाथ हो जाएँगे। मैंने एक औरत का हाथ पकड़ा तो उसको मैं अपनी किस्मत पर नहीं छोड़ सकता। यही विचार कर मैं क्रोध के आँसू पीकर रह गया, वरना मैं उसी वक्त उसको मार डालता।''

''बाबूजी, जानते है, इसके बाद क्या हुआ। मैं वहाँ से निकल कर एक झाड़ी के पीछे छिप गया तभी एक मोटर गाड़ी आई उसमें जंगल का अफसर

भी था। गाड़ी के मालिक ने मोटर गाड़ी की बत्तियाँ जलाकर उस रोशनी में रुपयों के कई बण्डल गिन-गिन कर रख दिये। अफसर जंगल के कई चंदन के पेड़ दिखा कर उनको कटवाने की सलाह दे रहा था, उनके जाने के बाद मैं पेड़ पर चढ़ा, बहुत सारी लकड़ी काटी, खुश होकर नीचे उतरा तो मेरा पैर साँप की एक लंबी बांबी पर पड़ा। बाबूजी, जानते है क्या हुआ। बाँबी में से एक नाग फुफकारते हुए निकला। आगर वह मुझे डस लेता तो मेरी बीवी का सिंदूर पूँछ जाता और मेरे बच्चे अनाथ हो जाते। दर-दर भटकते हुए भीख माँगते।'' ये शब्द कहते वह फफक-फफक कर रोने लगा।

थोड़ी देर रूककर फिर बोला ''बाबू जी, यह पापी पेट भरने के लिए आदमी क्या नहीं करता है डाका डालता है, धोखा देता है, खून करता है, दगा देता है, भूख की ज्वाला जब शरीर को भस्म करने के लिए लपलपाती है, तब आदमी अंधा हो जाता है। हैरान हो जाता है, लकिन मैं ईमानदारी के साथ जीना चाहता हूँ। मगर मेरे सामने जीने की कोई राह दिखाई नहीं देती। मजदूरी करने को तैयार हूँ। रोज काम नहीं मिलता। अब आप बताइये, मुझे क्या करना है। पढ़े - लिखे है।''

मैं सोचने लगा कि हमारे समाज में एसे कितने ही पेशेवर लोग है जिनकी जीविका आकाश-कुसुम तोड़ने के बराबर है। मुझे गहरी सोच में डूबे देख लकड़हारा मेरे समीप आया, और कौतूहलवश पूछा ''बाबू जी बसों में काम करने वाले ये लोग हड़ताल क्यों कर रहे हैं ?

मैंने सहज भाव से जवाब दिया ''ये लोग तनख्वाह और भत्ते बढ़ाने की माँग करते हुए हड़ताल कर रहे है।''

''बाबू जी मैंने सुना है कि इन लोगों को तरह-तरह के भत्ते मिलते हैं और सहूलियतें दी जाती है, क्या यह बात सच है ?''

''हाँ भाई, बिलकुल सच है। उन्हें घर-भाड़ा मिलता है, नगर-भत्ता, बीमार पढ़ने पर इलाज़ का खर्च, बोनस, पेंशन, प्राविडेंड फण्ड, ग्रेजयुटी। छुट्टी का वेतन, एल.टी,सी., इंक्रिमेंट, प्रमोशन और भी कई सुविधाएँ प्राप्त है।

किसी कर्मचारी के मरने पर उसकी पत्नी व बच्चों के लिए भी पेंशन की सुविधा प्राप्त है ।''

''तब तो बाबूजी, इतनी सारी सुविधाएँ पाकर भी ये लोग हड़ताल कर रहे हैं ? हमको सरकारी नौकरी नहीं मिल सकती ?''

''पढ़े - लिखे लोगों को ही सरकारी नौकरी मिलती है । अनपढ़ लोगों को नहीं ।''

''क्या अनपढ़ लोगों को भूख नहीं लगती ?''

''लगती है, लेकिन सरकार को चलाने के लिए पढ़े-लिखे लोगों की ज़रूरत होती है ।''

''तो बाबू जी, अनपढ़ लोगों से भी तो वोट माँगते हैं । मैंने भी वोट दिया है, मेरी औरत ने भी वोट दिया है । यह सरकार चलाने वालों के लिए हमारे वोट की ज़रूरत होती है तो उन्हें चाहिए कि हमें कोई काम दिला दें ।''

''दिलाना तो चाहिए भाई! मगर सरकार के पास जैसे काम होते हैं। वैसे लोगों को सरकार चुनती है ।''

''तो क्या हम किसी काम के नहीं ? हमारे बाप-दादा ने यही काम किया, हमारे परदादाओं ने भी यही काम किया । हमें कोई दूसरा काम सिखा दें तो हम भी कर सकते है न!''

''बात तो सही है । मगर सरकार सभी लोगों को काम कहाँ से दे सकती है ?''

''हाँ, साहब, आप लोग तो ऐसे ही कहते हैं । चूँकि आप लोगों का पेट भर गया है । हम तो मुफ्त में तो सरकार से खाना नहीं माँगते, हमें काम दें और रोटी का इन्तज़ाम करे । हमारा माल न बिका तो सरकार खरीद ले, जहाँ कुछ लोगों को सारी सहूलियतें दी जाती है । वहाँ हम जैसे लोगों को क्यों नहीं ? क्या हमारे घर-द्वार, बीवी-बच्चे नहीं है ? क्या हम इस देश के नागरिक नहीं हैं ? क्या हमें भूख नहीं लगती है ? यह कमबख़्त भूख भी हड़ताल करे तो क्या ही अच्छा होता ? हमारी समस्या अपने आप हल हो जातीं ।''

लकड़हारा बराबर कहता जा रहा था, उसके सवालों का मेरे पास कोई जवाब नहीं था । वाकई वह जो कुछ कह रहा था, मेरी दृष्टि में सही था । खाने की गैरंटी हमारे समाज में सब के लिए होनी ही चाहिए । इस तथ्य को महसूस करते मैं वहाँ से चुपके से निकल गया । इतने में सामने से जीप आती दिखाई दी । मेरी समस्या तो हल हो गयी, किन्तु मेरे कानों में लकड़हारे के सवाल गूँज रहे थे । वे सवाल प्रश्न - चिन्ह बनकर मेरे चारों तरफ़ फैलते गये ।

***

मुख्य विषय :

'भूख हड़ताल की कहानी में एक स्वाभिमान जीवन बितानेवाले एक लकड़हारे की मनोभावना, बाधा का चित्रण है । लकड़हारा हर दिन जलावन बेच कर जीविका चला लेता है । एक दिन परिवहन विभाग वालों ने हड़ताल किया है । उस दिन बस स्टेशन सूना सूना रह गया । कहानीकार मीटिंग में जाने के लिए बस - स्टेशन आता है, परिस्थिति देखकर परेशान होता है कि मीटिंग में कैसे पहुँचे । इतने में लकड़हारा आकर कहानीकार से अनुरोध करता है कि जलावन खरीदें । लकड़हारा सस्ते में देना चाहता है, फिर भी कहानीकार लेना नहीं चाहता क्योंकि इस समय मीटिंग में जाना है । भूखा लकड़हारे की विवशता को जानकर कहानीकार उससे कहता है कि इस समय तो मैं जलावन नहीं ले सकता, लेकिन लकड़हारा नारायण से कहता है, ''तुम ये दो रुपये ले लो लकड़ी भी साथ में ले जाओ ।'' लेकिन स्वाभिमान नारायण कहता है बाबू जी मुझ पर आपको मेहरबानी दिखाने की जरूरत नहीं, हम कोई भिखमाँगे नहीं है।

'मेहरबानी' से एक दिन की भूख मिटती है, लेकिन भूख की समस्या हमेशा की है, उसे मिटाने का काम सरकार का है ।

सारांश :

यह कहानी एक शिक्षित व्यक्ति की है जिसे एक महत्वपूर्ण मीटिंग केलिए

समय पर मद्रास (चेन्नई) पहुँचना है। वह सुबह पाँच बजे उठकर तैयार हो जाता है और बस स्टैंड पहुँचता है, लेकिन वहाँ कोई भी बस नहीं होती। उसे पता चलता है कि परिवहन विभाग की हड़ताल चल रही है, जिससे सभी बसें बंद हैं। वह बेहद परेशान होता है। क्योंकि दो पहर तक उसे मीटिंग में पहुँचना अनिवार्य है। जहाँ उसे ''प्रौढ़शिक्षा की समस्याएँ'' विषय पर भाषण देना है। उसके साले साहब ने जीप भेजी थी, जिसमें राजगोपाल (ड्राइवर) और चिन्नस्वामी (नौकर) आते हैं। वे मिलकर वैकल्पिक साधन खोजने निकल जाते हैं।

इसी दौरान लेखक एक चाय की दुकान पर जाता है और मन को शांत करने केलिए चाय पीता है और सिगरेट पीता है। वहाँ उसकी भेंट एक लकड़हारे नारायण से होती है, जो जलावन की लकड़ियाँ बेचने आया है। भूखे लकड़हारे की विवशता को जानकर कहानीकार उससे कहता है कि इस समय तो मैं जलावन नहीं ले सकता, लेकिन लेखक लकड़ हारा नारायण से कहता है, ''तुम ये दो रुपये ले लो लकड़ी भी साथ में ले जाओ।'' लेकिन स्वाभिमान नारायण कहता है 'बाबू जी मुझ पर आपको मेहरबानी दिखाने की जरूरत नहीं, हम कोई भिखमाँगे नहीं है।'

'मेहरबानी'से एक दिन की भूख मिटती है, लेकिन भूख की समस्या हमेशा की है, उसे मिटाने का काम सरकार का है। लकड़ हारा समाज की कठोर सच्चाइयों को उजागर करता है। वह बताता है कि कैसे जंगल के गार्ड ने उसे गालियाँ दीं, कैसे चंदन के पेड़ों की अवैध कटाई में अफसर शामिल हैं, और कैसे वह साँपके काटने से बाल - बाल बचा। वह कहता है कि मेहनत से जीना चाहता है। लेकिन रोज काम नहीं मिलता। उसकी बातें लेखक के दिल को छू जाती हैं। वह बताता है कि भूख इंसान को क्या - क्या करने पर मजबूर कर देती है।

लेकिन वह फिर भी ईमानदारी से जीना चाहता है। जब लकड़हारा यह जानता है कि हड़ताल करने वाले बसकर्मियों को कई प्रकार की सुविधाएँ

मिलती हैं, तो वह आश्चर्य चकित होता है कि फिर भी वे क्यों हड़ताल करते हैं। वह पूछता है कि क्या अनपढ़ लोगें को भूख नहीं लगती?

क्या वे इस देश के नागरिक नहीं हैं ?

जब उनसे वोट माँ गेजाते हैं तो उन्हें काम क्यों नहीं दिया जाता ?

लेखक के पास इन सावालों का कोई उत्तर नहीं होता।

कहानी के उंत में, जब लेखक की सवारी लौट आती है और उसकी समस्या हल हो जाती है, तब भी लकड़हारे के सवाल उसके मन में गूँजते रहते हैं। ये सवाल सिर्फ एक व्यक्ति के नहीं, बल्कि समाज के हाशिए पर खड़े करोड़ों लोगों के हैं - जो जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं केलिए भी संघर्ष कर रहे हैं।

यह कहानी समाज मेंव्याप्त असमानता, बेरोजगारी और व्यवस्था की विफलता को उजागर करती है।

मुख्यसंदेश :

यह कहानी बताती है कि भूख और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि पूरे समाज की हैं। जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति की भूख की सुनिश्चितता नहीं होगी, तब तक प्रौढ़ शिक्षा या अन्य विकास योजनाओं का कोई अर्थ नहीं।

संभाव्य प्रश्न :

1. 'भूख हड़ताल' कहानी का सारांश लिखिए।
2. अधेड आदमी 'नारायण' का चरित्र चित्रण कीजिए।
3. कहानी तत्वों के आधार पर 'भूख हड़ताल' कहानी की समीक्षा कीजिए।